दीनानाथ घास

वानस्पतिक नामः *पेनिसेटम पेडिसिलेटम*

कुलः पोएसी

दीनानाथ घास शुष्क एवं अर्धशुष्क क्षेत्रों, घास के मैदानों एवं बंजर जगहों में आसानी से उगाई जाने वाली तथा तेज बढ़वार वाली मौसमी/एकवर्षीय घास है। इस फसल में सूखारोधी क्षमता काफी अच्छी होती है। यह फसल कम पानी की उपलब्धता एवं बारानी क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण हरा चारा प्रदान करने हेतु उत्तम फसल है। अदलहनी चारा फसल होने के कारण इसको दलहनी हरे चारे के साथ मिलाकर पशु आहार का संतुलन किया जा सकता है।

जलवायु एवं मृदाः

दीनानाथ घास उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु की फसल है जो शुष्क और अर्धशुष्क क्षेत्रों में उगाई जाने वाली आदर्श एकवर्षीय और सूखारोधी घास है जिसको अधिक तापमान एवं कम पानी उपलब्धता वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। यह फसल जलभराव के प्रति संवेदनशील है। अतः ऐसी मृदाएं जो समतल हो और जिनका जल निकास अच्छा हो वह उत्तम मानी जाती हैं। दीनानाथ घास की खेती लगभग सभी प्रकार की मृदाओं में कर सकते है लेकिन दोमट मृदा उत्तम मानी जाती है। मृदा जिसमे जलभराव की समस्या हो वह दीनानाथ फसल की खेती के लिए उपयुक्त नहीं होती है। खेत की तैयारी हेतु मानसून की पहली बारिश के बाद एक जुताई मिट्टी पलट हल से करनी चाहिए फिर 2–3 जुताइयाँ हैरो से करके खेत को समतल करना चाहिए।

बीज एवं बुवाईः

दीनानाथ फसल की बुवाई हेतु छिड़काव विधि से 6–8 किग्रा./हे. बीज की आवश्यकता पड़ती है, जबकि नर्सरी द्वारा पौध तैयार करने के लिए 3 किग्रा. बीज की आवश्यकता होती है। बुवाई का उचित समय जून–जुलाई माह होता है। सिंचित क्षेत्रों में इसे मार्च–अप्रैल में भी उगा सकते है। बुवाई के लिए कतार से कतार की दूरी 40 सेमी., पौध से पौध की दूरी 15–20 सेमी. व बीज की गहराई 1–1.5 सेमी. होनी चाहिए।

पोषक तत्व प्रबंधनः

पोषक तत्वों के प्रबंधन हेतु 8–10 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी गोबर की खाद बुवाई से पूर्व खेत में डालें। इसके अलावा प्रति हेक्टेयर 60–70 किग्रा. नत्रजन एवं 30–40 किलो फॉस्फोरस का भी प्रयोग करें। फॉस्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय एवं नत्रजन को दो भागों में बांटकर आधी मात्रा बुवाई/रोपाई के समय शेष रोपाई के 6–7 सप्ताह बाद फसल में डालें। प्रत्येक कटाई उपरांत 25–30 किग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टेयर भी खेत में डालें।

उन्नत प्रजातियाँ

उन्नत किस्में	प्रमुख विशेषताएँ	उपयुक्त क्षेत्र	हरा चारा उपज (क्विंटल प्रति हेक्टेयर)
बुंदेल दीनानाथ–2	जल भराव और सूखे की स्थिति के प्रति सहिष्णु	संपूर्ण भारत	375
बुंदेल–1	सूखा प्रतिरोधी और त्वरित पुनर्वृद्धि	संपूर्ण भारत	345
सीओडी–1	विषैले पदार्थ रहित स्वादिष्ट चारा	तमिलनाडु	675
जवाहर पेनिसेटम–12	अधिक पत्तियों की संख्या	मध्य भारत	520
पूसा दीनानाथ घास	सभी प्रकार की मिट्टी के लिए अनुकूल	पहाड़ी क्षेत्रों को छोड़कर संपूर्ण भारत	685

जल प्रबंधनः

दीनानाथ मुख्य रूप से मानसून के समय उगाई जाती है इसलिए इस फसल को सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है फिर भी मार्च–अप्रैल में उगाई गई फसल में समुचित अंकुरण एवं वृद्धि हेतु वर्षा होने तक प्रत्येक 10–15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

फसल सुरक्षा

यह फसल काफी रोगरोधी है इसलिए इसमें कीट एवं रोग का प्रकोप नहीं होता है।

कटाई

बीज द्वारा बोई गई फसल की कटाई बुवाई के 80–100 दिन बाद करें, जबकि रोपाई की फसल को 65–75 दिन पर कटाई करते है। घास की कटाई भूमि से करीब 10–12 सेमी ऊपर से करनी चाहिए, जिससे पुनर्वृद्धि शीघ्र हो सके।

उपज

इस फसल से प्रति वर्ष औसतन 550– 650 क्विंटल हरा चारा प्रति हे. प्राप्त किया जा सकता है।

प्रकाशक:
डॉ. अमरेश चन्द्रा
निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
ग्वालियर रोड, निकट पहूज बाँध, झाँसी–284003 (उत्तर प्रदेश)
0510-2730666
0510-2730833
director.igfri@icar.gov.in
https://igfri.icar.gov.in
@ icarigfri Jhansi
igfri.jhansi.56
IGFRI Youtube Channel
Kisan Call Centre 0510-2730241

मुद्रक : क्लासिक इण्टरप्राइजेज, झाँसी. 7007122381, 9415113108

आई.जी.एफ.आर.आई./एस.सी.एस.पी./2023/फोल्डर/08

अनुसूचित जाति उप परियोजनांतर्गत

दीनानाथ घास

संकलनकर्ता:
गौरेन्द्र गुप्ता, पुरूषोत्तम शर्मा, साधना पाण्डेय, सुनील कुमार, अमित कुमार पाटील, बिश्व भास्कर चौधरी, दीपक उपाध्याय, बृजेश कुमार मेहता, राजेश कुमार सिंघल, महेश एच.एस., मनजंगौड़ा एस.एस., मुकेश चौधरी, अविनाश चंद्र, सचेन्द्र त्रिपाठी, प्रतीक श्रीवास्तव एवं रोहित वर्मा

भा.कृ.अनु.प.-भारतीय चरागाह एवं चारा अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
ग्वालियर रोड, झाँसी-284003 (उ.प्र.)